

विचार शक्तियाँ शताब्दियों से कविता का सहारा ले रही हैं। 'कवि' मानविक कल्पनाओं का सम्राट है, शब्दों का स्वामी, भागी दर्शक, समृद्ध अनुपम जिसने अस्तित्व को समझा है, और कुछ ही शब्दों में तत्त्विक अनुभवों और और अहसासों को रूपायित किया है। देश में कविता का प्रेम तो हमें बचपन से ही मिला है, जीवित परम्परा की बहुभूत्य सम्पत्ति की तरह। और आज भी मेरे लिये परदेस में हिन्दी कविता पढ़ना या संगीत सुनना एक सुखद अनुभूति है।

■

क्या आज मैं पूछूँगा अतिथि कवि से, कुछ प्रश्न, उन समस्याओं के बारे में जिनका मेरे पास जवाब नहीं, उन हिन्दी शब्दों का अर्थ, वे दोहे जिन्हें मैं भूल सा रहा हूँ, पर जिनकी गूँज अभी तक अविकल है। क्या वे खुद बताएँगे इस असफल चित्र को देखकर कि कविता लिखने में वही निराशा, वही पीड़ा, वही सुख है और उन्हीं स्वरों का सामना करना पड़ता है। क्या मैं कड़ूँगा कि चित्रकार 'गूँगा' होता है, क्या वे जवाब देंगे कि कवि 'अन्धा' होता है, अन्तरज्योति के बावजूद। सालों सक्रिय होते हुए भी मैं खुद नहीं समझ सका हूँ कि कैसे, किस गुन में चित्र बनते हैं, चित्रकला क्या है। अगर एक ऐसा दिन आये और मुझे यह समझ मिल सके तो शायद मैं चित्र बना ही न सकूँगा। एक संगीतज्ञ की तरह मैं अपने उन चित्रों के बारे में जहाँ "चित्रता" संपूर्ण हो सकी है, केवल यही कड़ूँगा "यह भगवान की कृपा है।" इलेरा की गुफाओं में एक शिल्पकार ने बड़ी दान शक्ति से लिखा है: "शतभयां कृतम हो कृत मित्यवस्थात्"

■

नहीं, बहुत यही है, मैं कुछ नहीं पूछूँगा। कला के बारे में प्रश्न आक्रमण के समान लगते हैं। हमारे व्यक्तिगत, गुप्त और एकान्त क्षेत्रों में जहाँ हम खुद न पहुँच सके, जिनकी अभी तक हमें कुछ पहचान नहीं है, हम दर्शकों को किस तरह ले जा सकेंगे। हम किस तरह समझाएँ उन समस्याओं को जिन्हें हम खुद नहीं समझ पाते। ये बातें तो इरफ़ानियों की मझदिलों में ही बड़ी शान से हो सकती हैं। आलोचकों और समीक्षकों के बीच। मैं विनयशील होकर यही कड़ूँगा: "मेरे लिये सक्रिय रहना ही काफी है।"